श्रीद्वारकेशो जयति

[श्रीद्वा. ग्र. माला का पुष्प १३]

प्राचीन वार्ता-रहस्य

द्वितीय भाग

अष्ट-छाप

श्रीहरिरायजी कृत भावप्रकाश, (व्रजभाषा)
मूल वार्ता एवं प्रासंगिक ऐतिहासिक
विवेचन (गुजराती) सहित, सचित्र-

सम्पादक—प्रकाशक
द्वारकादास पुरुषोत्तमदास परिख
श्रीविद्याविभाग—कांकरोली

वि. सं. १९९८ श्रीसूर शरणागति संवत ४३१ श्रीवल्लभाब्द ४६३